Date - 28/07/2020

Dr. Sanehlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. - Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. - 8409587640

Class - B.A. -I. (Hons.)

Topic - Phenomena and Noumen : Kant -1

Scanned with CamScanner

व्यवहार एवं परमार्थ (Phenomena and Noumena)

कांट की ज्ञानमीमांसा द्वैतवादी है। वे व्यवहार और परमार्थ के भेद को स्वीकार करते हैं। कांट ज्ञानक ज्ञान के रूप में संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णय को स्वीकार करते हैं, जो इन्द्रियानुभव और बुद्धि विकल्प दोनों के समन्वय से उत्पन्न होता है। जब इन्द्रियानुभव से प्राप्त सामग्री बुद्धि विकल्पों के साँचों में ढलती है तब ऐसे ज्ञान की उत्पत्ति होती है। कांट के अनुसार ज्ञान की सामग्री संवेदना है। इन संवेदनाओं को देश और काल के आकार में रखकर ही प्राप्त किया जा सकता है। ये संवेदनाओं के अधिष्ठान अर्थात वस्तु अपने आप में क्या है इसका ज्ञान नहीं हो पाता है। दूसरे शब्दों में परमार्थ का ज्ञान नहीं हो पाता है। इस प्रकार कांट के दर्शन में ज्ञाता और ज्ञेय के द्वैत की स्वीकृति व्यवहार और परमार्थ के द्वैत को जन्म देती है। कांट यह मानते हैं कि जो देश और काल में है केवल उसी तत्व का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, जो देश-काल से परे है उस तत्व का ज्ञान सम्भव नहीं हो सकता। स्पष्ट है कि व्यवहार ज्ञेय है जबकि परमार्थ अज्ञेय है। व्यवहार अनुभविक है और परमार्थ अनुभवातीत है, बुद्धि के विकल्पों का प्रयोग व्यवहार तक ही सीमित है। इसकी परमार्थ तक गति नहीं हो सकती।

इस प्रकार बुद्धि की एक सीमा घोषित कर कांट एक प्रकार से अज्ञेयवाद (Agnosticism) का समर्थन करते हैं। अज्ञेयवाद से कांट का तात्पर्य है कि 'मूल पदार्थ' या 'स्वलक्षण वस्तु' (thing-in-itself) अज्ञेय है।

ज्ञान की रचना

ज्ञान की रचना में कांट उसके दो तरह के अवयवों में अन्तर करते हैं- विषयवस्तु और आकार। अनुभव से ज्ञान का विषय या उपादान मिलता है और बुद्धि से आकार। कांट के अनुसार हमारी संवेदनशक्ति ज्ञान का विषय प्रस्तुत करती है। ये विषय संवेदनाएँ हैं। संवेदन-शक्ति संवेदनाओं को अपने अन्दर से उत्पन्न नहीं करती, बल्कि बाह्य जगत से ग्रहण करती है। परंतु वह उन संवेदनाओं को मौलिक रूप में ग्रहण नहीं करती। संवेदनशक्ति के दो अनुभव-निरपेक्ष आकार हैं- देश और काल के माध्यम से संवेदनाओं को ग्रहण करके वह

Scanned with CamScanner

ज्ञान के विषय को प्रस्तुत करती है।

बुद्धि (Understanding) संवेदनशक्ति से प्राप्त प्रत्ययों को सुसंबद्ध और व्यवस्थित करके ज्ञान का रूप देती है। जैसे - संवेदनशक्ति हमें, 'अग्नि', 'उष्णता' जैसे असंबद्ध, बिखरे हुए प्रत्यय ही दे सकती है। बुद्धि इनमें संबंध स्थापित करके "अग्नि उष्णता का कारण है" - इस ज्ञान वाक्य की रचना करती है। ऐसी रचना करने के लिए बुद्धि अपनी प्रागनुभविक कोटियों का प्रयोग करती है। बुद्धि में इस तरह की 12 कोटियाँ है जिनके द्वारा वह प्रत्ययों को भिन्न-भिन्न रूप में संबद्ध करती है:-

1. एकता 2. अनेकता 3. संपूर्णता	परिमाणात्मक (Quantitative)
4. सत्ता 5. अभाव 6. सीमा	गुणात्मक (Qualitative)
7. द्रव्य-गुण-भाव 8. कारण-कार्य भाव 9. अन्योन्याश्रय संबंध भाव	संबंध सूचक (Relational)
10. संभावना एवं असंभावना 11. वास्तविकता एवं अवास्तविकता 12. अनिवार्यता एवं आपातिकता	प्रकारवाचक (Model)

Scanned with CamScanner